पाठ-9

# परमेश्वर आपकी प्रार्थनाएँ सुनता है

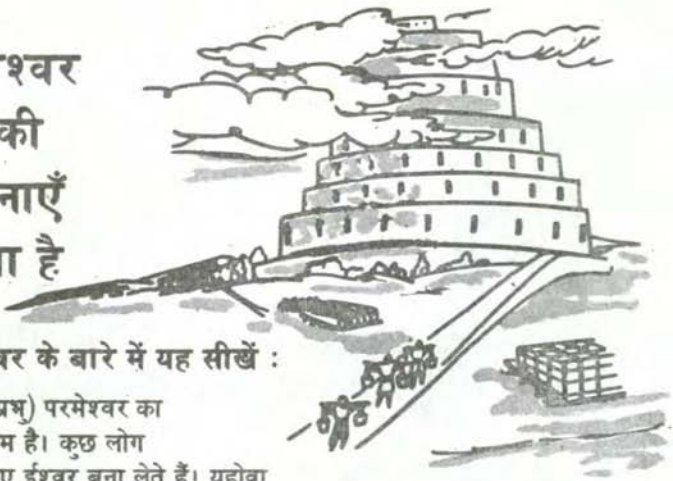

## परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

यहोवा (प्रभु) परमेश्वर का दूसरा नाम है। कुछ लोग अपने लिए ईश्वर बना लेते हैं। यहोवा ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। परमेश्वर चाहता है कि आप उससे प्रार्थना करें।

**अपनी बाइबल में से यह पढ़ें**
**इसे पांच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :**
"यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना" व्यवस्था विवरण 6:4, 5.

## क्या आप यह कर सकते हैं ?

सही उत्तर वाले शब्दों को रेखांकित करें :

1. परमेश्वर चाहता है कि आप किससे प्रार्थना करें ?
   लोगों के द्वारा बनाये गये ईश्वरों से  यहोवा परमेश्वर से
2. आप परमेश्वर के प्रति कैसा महसूस करते हैं ?
   उसे प्यार करें  उससे भयभीत हों  उसे भूल जाएँ
3. परमेश्वर के लिए दूसरा नाम क्या है ?
   महिला  यहोवा (प्रभु)  अन्जाना व्यक्ति  प्राचार्य

**उत्तर**

1. यहोवा परमेश्वर से 2. उसे प्यार करें 3. यहोवा (प्रभु)

## कुछ लोग अपने लिए ईश्वर बना लेते हैं।

*चिन्ह* के सब शब्दों को रेखांकित करें:
जल प्रलय के पश्चात् नूह के पुत्रों के बहुत से बच्चे हुए, और उनके बहुत नाती पोते हुए।
पृथ्वी पर फिर से बहुत बड़ी संख्या में लोग हो गये थे।

नूह और उसके पुत्रों ने लोगों को परमेश्वर के बारे में बताया।
*परन्तु लोगों ने नूह के समान परमेश्वर से प्रेम नहीं किया।*
*वे तो सब के सब मनमानी करना चाहते थे।*
वे न तो अपने माता-पिता, न अपने दादा-दादी (पूर्वजों) और न ही परमेश्वर की बात सुनना चाहते थे।

निर्मोद नामक मनुष्य ने स्वयं को राजा बनाया। वह चाहता था कि लोग उसकी आज्ञा मानें— न की परमेश्वर की
निर्मोद ने लोगों को परमेश्वर से दूर कर दिया।
*उसने लोगों को सूर्य और चन्द्रमा की पूजा करना सिखाया और उन्हें अपने लिए बहुत से ईश्वर (देवतागण) बनाना भी सिखाया।*

लोगों ने नगर बसाने, और एक ऊंची मीनार (गुम्बद) बनाने के लिए ईंटें बनाई।
परमेश्वर ने स्वर्ग से देखा कि लोग क्या कर रहे थे। उसे मालूम था कि लोग ग़लत काम कर रहे हैं।

*परमेश्वर ने कुछ समय के लिए उन्हें उन्हीं के भरोसे पर छोड़ दिया।* *तब परमेश्वर ने उन्हें रोका। * परमेश्वर ने दूसरी बार जल प्रलय नहीं भेजा।* उसने लोगों (मनुष्यों) की भाषा में गड़बड़ी डाल दी और लोग भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलने लगे। लोग आपस में एक दूसरे की बोली नहीं समझ सकते थे। वे एक दूसरे की भाषा (बात) नहीं समझ सकते थे। वे एक साथ काम भी नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने ऊंची मीनार का निर्माण (बनाना) रोक दिया। उन्होंने उस स्थान का नाम बाबुल रखा। बाबुल का अर्थ है "गड़बड़"।

लोगों ने निर्मोद और बाबुल दोनों को छोड़ दिया। वे प्रत्येक दिशा में चले गए। परिवार के सभी सदस्य एक साथ रहा करते थे। उन्होंने अपने लिए नगर बनाए (बसाए)।
*वे एक सच्चे परमेश्वर को भूल गए थे*

*जहाँ कहीं भी लोग रहने को गए वहाँ उन्होंने अपने लिए देवता बना लिए। * बड़े-बड़े देवता और छोटी-छोटी मूर्तियाँ, पत्थर और लकड़ी के देवता व मूर्तियाँ। *जो देवता (मूर्तियाँ) उन्होंने अपने हाथों से बनाई थीं उन्हीं की पूजा (उपासना) की। *

## यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है।

जो देवी देवता (मूर्तियाँ) लोगों ने बनाए थे वे सुन नहीं सकते थे। जो देवी देवता उन्होंने बनाये थे वे बोल नहीं सकते थे। न ही वे देख सकते थे। जैसा कि सच्चे परमेश्वर ने लोगों से प्रेम किया वैसा ये देवतागण नहीं कर सकते थे। वे न तो वास्तविक और न ही सच्चे ईश्वर (देवतागण) थे।

यहोवा ही केवल सच्चा परमेश्वर है। वह सुनता है, बोलता है और देखता है। लोग तो सच्चे परमेश्वर को भूल गये थे। और उन्होंने सच्चे परमेश्वर के पीछे चलना छोड़ दिया था परन्तु परमेश्वर उन्हें नहीं भूला था। परमेश्वर तो अभी भी उनसे प्रेम करता है और उनकी सहायता करना चाहता है।

## परमेश्वर आपकी प्रार्थनाएँ सुनता है।

आप एकमात्र सच्चे परमेश्वर को देख तो नहीं सकते, परन्तु वह आपके बहुत निकट आपके साथ है। जब आप सच्चे परमेश्वर से बातचीत करते हैं तो वह आपकी सुनता है। परमेश्वर चाहता है कि आप उससे बात करें परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और वह आपकी सहायता करना चाहता है। आपको जो चाहिए वह परेश्वर से माँगें।*

*परमेश्वर आपकी प्रार्थना सुनेगा और आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा। *

### इस प्रार्थना को सीख लें

प्रिय परमेश्वर, आप मुझे देखते हैं, मेरी सुनते हैं और मुझसे प्यार करते हैं, क्योंकि केवल आप ही सच्चे परमेश्वर हैं। आप हमेशा मेरे पास हैं। मैं, हे प्रभु केवल आप ही से प्रार्थना करूँगा और उन देवी देवताओं से प्रार्थना नहीं करूंगा जो मुझे कभी प्यार नहीं कर सकते, न मुझे देख ही सकते हैं और न ही मेरी बातें सुन सकते हैं।